International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

विभिन्न प्रकार की रक्षा युक्तियों का प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

श्रीमती नीता कन्हाई
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. एम. रजा खान
प्राचार्य, रविशंकर शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न प्रकार की रक्षा युक्तियों का प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 छात्राओं का चयन कर उन पर 'रक्षात्मक युक्ति मापनी' का प्रशासन किया गया तथा शैक्षणिक उपलब्धि का मापन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित (2017) की वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार प्रयोजन के विरूद्ध, प्रक्षेपण, प्रतिवर्ती रक्षा युक्तियों का उच्च एवं निम्न स्तर पर प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया जबकि प्रधानतापूर्वक, स्वयं के विरूद्ध रक्षा युक्तियों का उच्च एवं निम्न स्तर पर प्रयोग करने वाली छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है, इस वैज्ञानिक युग ने जहाँ प्रगतिशील तकनीकी सभ्यता को नया आयाम दिया है, वहीं अनुसंधान की असीम संभावनाओं को जन्म दिया है। आज हमने भौतिक सुख साधनों को प्राप्त करने के साथ–साथ नवीन खोजों एवं प्रगति को प्राप्त किया है। मानव की बढ़ती जिज्ञासाओं ने उसके मन को पहले से अधिक अशान्त कर दिया है, क्योंकि प्रकृति के रहस्यों को भेदने के लिए उसके प्रयास तीव्रतर हो गये हैं।

सत्रहवीं शताब्दी को जागृति का युग कहा गया है, अठाहरवीं को विवेक का युग, उन्नीसवीं को प्रगति का युग परन्तु वर्तमान शताब्दी को दुश्चिन्ता का युग कहा जा सकता है, इसलिए इस युग में मनोविज्ञान के अध्ययन का महत्व बढ़ गया है। शिक्षा में इसके महत्व को गुप्ता, एम. (1987) के शोधकार्य द्वारा समझा जा सकता है, जिसमें उन्होनें पाया कि दुश्चिन्ता का शैक्षणिक उपलब्धि के साथ ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। अर्थात दुश्चिन्ता शैक्षणिक उपलब्धि को अत्यधिक प्रभावित करती है।

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

चूंकि शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य भावी नागरिकों का निर्माण करना है, अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम विद्यालय स्तर पर ही छात्राओं में सकारात्मक आदतों का विकास करने का प्रयास करें। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर विद्यालय या कक्षा–कक्ष में छात्राओं की गतिविधियों का अध्ययन करके उनके भविष्य निर्माण एवं भविष्य निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाने वाली शैक्षणिक उपलब्धि को सही दिशा प्रदान की जा सकती है। प्रस्तुत शोधकार्य में विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों का प्रयोग करने वाली छात्राओं की पहचान करके शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना है, जिसकी सहायता से उपाचारात्मक कार्य द्वारा विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु स्वस्थ्य वातावरण प्रदान करने हेतु प्रयास किये जा सकते हैं।

जसूजा, एस.के. (1983) के इस अध्ययन में विद्यार्थियों में भग्नाशा स्तर में वृद्धि होने पर शैक्षिक उपलब्धि में कमी निष्कर्ष के रूप में पायी गई हैं। ज्ञानानी (1984) के अध्ययन के अनुसार अधिकांश न्यादर्श भग्नाशा स्थिति में अधिक आक्रामक या सुरक्षात्मक नहीं होते हैं। निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा वाले बालक अपेक्षाकृत अधिक अहं सुरक्षात्मक पाये गये। जबकि निम्न दुश्चिन्ता स्तर वाले विद्यार्थियों में अधिक संघर्षात्मक युक्ति पायी गयी। मनुअल (1982) के अध्ययन में चिन्ता आधारित तनाव का शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पाया गया, इसी प्रकार प्रसन्ना (1984) के मानसिक स्वास्थ्य पर किये गये अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य के सभी 16 चर शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले पाये गये। अग्रवाल, अलका (1989) ने शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक विकार और रक्षात्मक युक्तियों के प्रभाव के अध्ययन में पाया कि तनाव, दब्बूपन व दुश्चिंता स्तर का उच्च प्रयोग करने वाले विद्यार्थी, रक्षायुक्ति का प्रयोग करने वाले तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले पाये गये। नम्रता (1992) के अध्ययन में भी तनाव तथा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि के साथ नकारात्मक संबंध प्राप्त हुआ। इसी प्रकार बघेल (2009) ने भी पाया कि विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक योग्यता उनक अधिगम पर कोई प्रभाव नहीं डालती, परन्तु उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। शुक्ला (2014) के शोध अध्ययन में भी दुश्चिंता का उच्च स्तर रखने वाले डी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पायी गयी।

अतः विद्यालय में विद्यार्थियों की मनोरचनाओं संबंधी असामान्य व्यवहार एवं उसके प्रभाव को अनुभव करते हुए एवं पूर्व अध्ययन से प्राप्त परिणामों का अध्ययन करते हुए शोधकर्ता ने उपयुक्त समस्या का चयन प्रस्तुत शोधकार्य हेतु किया हैं।

उद्देश्य

विभिन्न प्रकार की रक्षा युक्तियों का प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना

विभिन्न प्रकार की रक्षा युक्तियों का प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपकरण

1. रक्षात्मक युक्ति मापनी – डॉ. एन.आर. मृणाल एवं स्व. उमा सिंघल
2. शैक्षणिक उपलब्धि का मापन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित बोर्ड परीक्षा के परिणामों के आधार पर किया गया। इसके लिए माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित उच्चतर माध्यमिक परीक्षा (2017) की वार्षिक परोक्षा के प्राप्तांकों का उपयोग किया गया।

विधि

सर्वप्रथम भोपाल जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गई तथा इस सूची में से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के अंतर्गत लॉटरी विधि द्वारा दो विद्यालयों का चयन किया गया तथा इन विद्यालयों की कक्षा बारहवीं में अध्ययनरत् कला संकाय की 100 छात्राओं का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर सामूहिक रूप से 'रक्षात्मक युक्ति मापनी' का प्रशासन किया गया तथा इसके परिणामों के आधार पर छात्राओं को दो वर्गों 'उच्च' तथा 'निम्न' में बांटा गया एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मापन लिए माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित उच्चतर माध्यमिक परीक्षा (2017) की वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों का उपयोग किया गया। प्राप्तांकों के आधार पर मास्टर शीट तैयार की गई। क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण

परिकल्पना : विभिन्न प्रकार की रक्षा युक्तियों का प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

तालिका

विभिन्न प्रकार की रक्षा युक्तियों का प्रयोग करन वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी तुलनात्मक परिणाम

रक्षा युक्तियों का प्रकार	रक्षा युक्तियों का स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
प्रयोजन के विरूद्ध	उच्च	63	55.39	7.56	3.05	< 0.01
	निम्न	37	60.88	9.31		
प्रक्षेपण	उच्च	59	56.23	8.41	2.32	< 0.05
	निम्न	41	59.92	7.37		
प्रधानतापूर्वक	उच्च	46	56.29	8.17	1.01	> 0.05
	निम्न	54	58.06	9.28		
स्वयं के विरूद्ध	उच्च	61	56.49	8.14	1.27	> 0.05
	निम्न	39	58.77	9.06		
प्रतिवर्ती	उच्च	47	58.56	8.15	2.78	< 0.01
	निम्न	53	54.34	7.89		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 1.98

0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि प्रयोजन के विरूद्ध, प्रक्षेपण, प्रतिवर्ती रक्षा युक्तियों का उच्च एवं निम्न स्तर पर प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इन रक्षा युक्तियों का प्रयोग करने वाली छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 3.05, 2.32, 2.78 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.01, 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.63, 1.98 की अपेक्षाकृत अधिक हैं, जबकि

प्रधानतापूर्वक, स्वयं के विरूद्ध रक्षा युक्तियों का उच्च एवं निम्न स्तर पर प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इन रक्षा युक्तियों का प्रयोग करने वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 1. 01, 1.27 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षाकृत कम हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रयोजन के विरूद्ध, प्रक्षेपण, प्रतिवर्ती रक्षा युक्तियों का उच्च एवं निम्न स्तर पर प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया तथा प्रयोजन के विरूद्ध, प्रक्षेपण रक्षा युक्ति का प्रयोग निम्न स्तर पर करने वाली छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि, इन रक्षा युक्तियों का प्रयोग उच्च स्तर पर करने वाली छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गयी परंतु प्रतिवर्ती रक्षा युक्ति का प्रयोग उच्च स्तर पर करने वाली छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि, इस रक्षा युक्ति का प्रयोग निम्न स्तर पर करने वाली छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गयी। प्रधानतापूर्वक, स्वयं के विरूद्ध रक्षा युक्तियों का उच्च एवं निम्न स्तर पर प्रयोग करने वाली छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

प्रयोजन के विरूद्ध, प्रक्षेपण, प्रतिवर्ती रक्षा युक्तियों का उच्च एवं निम्न स्तर पर प्रयोग करने वाली उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया जबकि प्रधानतापूर्वक, स्वयं के विरूद्ध रक्षा युक्तियों का उच्च एवं निम्न स्तर पर प्रयोग करने वाली छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची//

1- Brown (1948) & Kagan (1958), कुण्ठा एवं द्वंद, असामान्य मनोविज्ञान (P–112), दिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास

2- Choubey, S.P (n.d.) असामान्य मनोविज्ञान एवं आधुनिक जीवन, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर

3- Clark (1994), असामान्य मनोविज्ञान : विषय और व्याख्या, (P–214), दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास.

4- Kapil, H.K. (2007), अपसामान्य मनोविज्ञान, आगरा : एच.पी. भार्गव बुक हाउस

5- Mrinal, Dr. N.R. & Uma, Singhal, रक्षात्मक युक्ति मापनी, आगरा : नेशनल सॉइकोलॉजिकल कापोरेशन

6- Mrinal, N.R. & Fadnis, P.B. (1982), रक्षात्मक व अरक्षात्मक युक्ति अध्ययन, रक्षा युक्ति मापनी (P-16), आगरा : नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन

7- Mrinal, N.R. & Singhal, U (1981), विशेषत आवश्यकता वाले विद्यार्थियों में रक्षा युक्ति का प्रयोग, रक्षा युक्ति मापनी, (P-17) आगराः नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन

Journal & Survey

1- Bhutia, Dr. Yodida & Bhalang Sungoh (2014), शिलॉग के किशोरों में भग्नाशा प्रतिक्रिया, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ऐजूकेशन एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, Vol-3, (54-58), शिलाँग : जे.पी. ई.आर.ओ.आर.जी.

2- Deshmukh, Dr. Nivedita (2014), रक्षात्मक युक्तियों का संक्षिप्त अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइन्टिफिक रिसर्च (128-129), Vol.-3/issue7/July 2014, नवी मुम्बई ISSN No 2277-8179

3- Shukla, Kamlesh (2014), डी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, सामाजिक शोध योजना (53), ISSN 2278 – 3377, Vol.-2/3/July 2014, Hoshangabad